Date

स्वंयसिद्धा बने

14-1-2009
4 Am.
(आश्रम)

सभी परमात्माओ को मेरा नमस्कार - - -

"स्त्री शक्ती" जन्म लेने के पुर्व से ही संघर्ष का सामना करती है। क्योकी प्रत्येक माँ पुत्र चाहते रहती है। और भले ही वह पुत्र माँ के जिवन मे कभी काम न आये, स्त्री शक्ती को कोई बांध नही देखते रहता है। फिर भी वह जन्म लेती है। विपरीत परीस्थितीयो मे भी वह जन्म लेती है। वह बचपन से जन्म से एक विवशता लीये जन्म लेती है, और जन्म लेकर अपनी जगह खुद ही निर्माण करती है। "स्त्री शक्ती" के शरीर की सहनशिलता एक जन्म से प्राप्त विशेषता है, इस लीये सामान्य तह देखा गया है, स्त्री भ्रुण का गर्भपात नही होता है.

आज नये नये अतीष्कारो ने गर्भ मे ही लींग परीक्षण करना प्रांरभ किया है, और गर्भ मे अगर स्त्री भ्रुण हो तो गर्भपात करते है, यह गैर कानुनी भी है, और डॉ के व्यवसाय के विरोध मे भी है, जब इस प्रकार का अपराध डॉ करते है, तो वे स्वयम भी आत्मग्लानी मे चले जाते है, और जब ये करते है, तब यह पाप है, इसका पता नही चलता पर जब ये डॉ ध्यान मार्ग मे आते है, और उनको आत्मा का साक्षात्कार होता है, तब इन्हे अपने किये गये अपराध का बोध होता है, कई डॉ को मैंने मेरे सामने रोते हुये देखा है, वे कहते है, हमने एक ओर मनुष्यता की हत्या की और दुसरी ओर अपने व्यवसाय की भी हत्या की डॉ का कर्तव्य है, जिवन बचाना जिवन लेना डॉ के व्यवसाय के विरोध मे है

हमने उन छोटी२ बालीकाओ की हत्या की जो यह जगत मे आना चाहती थी थोडे से पैसे के लालच मे हमने एक कसाई से भी बुरा कार्य किया है. उन बालीकाओ के छोटे२ टुकडे मैने किये है. आज भी वह यादे मुझे अंशान्त कर देती है। ऐसा कहते रहते है।

ऐसे डॉ को मैने समझाया जो हो गया वह हो गया अब तुम आत्मसाक्षात्कारी हो गये हो अब जानबुझ कर यह पाप मत करो जो हुआ वह तुम्हारी अज्ञानता के कारण हुआ। अब तुम तुम्हारा सारा पाप मुझे दे दो तुम्हारा सारा भुतकाल मुझे गुरुदक्षणा मे दे दो, और जब भी तुम्हे तुम्हारा खराब भुतकाल याद आये तब अपने आप को समझाओ की यह भुतकाल मै स्वामीजी को दान मे दे चुका हुं, अब मेरा उस पर कोई अधीकार ही नही है, आवश्यक यह भी है। की माँ स्वयम अपने गर्भ की सुरक्षा करे और वह इस प्रकार के बुरे कर्म के लिये तैयार ही न हो. एक नारी ही एक नारी को सुरक्षा प्रदान कर सकती है अपने सहन करने की शक्ती को बढाये आप मे सहनशीलता की अपार संपदा है। केवल आप को आप का ज्ञान नही है। जिवन के प्रत्येक परीस्थीती मे से आप रास्ता नीकाल सकती है। आप अकेली नही है। आप के साथ है। लाखो सकारात्मक आत्माओ की सामुहीकता आप इन अनुष्ठान मे उस सामुहीक शक्ती से जुडे और अनुष्ठान के बाद एक बहुत बडा "अंतरराष्ट्रीय संगठन स्त्री शक्ती" का निर्माण करे. आप ही मेरे कार्य की शक्ती है, यह सारा कार्य ही आपके सहयोग से ही प्रारंभ हुआ बढा और विकसीत हुआ और आगे भी विश्वभर पर बढेगा। मै तो आपकी शक्ती से पुर्णतह परिचीत हुं. केवल आप ही है. जो अपनी इस शक्ती को नही जान पा रही है. "कुंडलीनी शक्ती" ही स्वयम एक स्त्री शक्ती है. इस लीये इस कार्य का आधार ही आप है।

आपके ही भितर की "आदिशक्ती" का जागरण ही ध्यान है। मैं तो केवल निमीत्यमात्र दिख रहा हु, सारा कार्य तो आप ही ने संभाल रखा है, मैं तो इन अनुष्ठान मे आपको आप से ही परिचीत करा रहा हु, मेरा तो बस अनुष्ठान का इतना ही लक्ष्य है।

आप आपकी भितर की यात्रा करो और आप का सारा चित्त उस भितर की आदिशक्ती पर लगाओ तो आप अनुभव करेगी की वह उर्जा शक्ती उद्योगामी हो रही है और इन अनुष्ठान के दौरान आप को एक बहुत बडी सामुहीकता प्राप्त होगी, और दिव्य अनुभुतीया आपको आपके ही भितर से ही प्राप्त होगी, आपको केवल इतना ध्यान देना है की इन अनुष्ठान मे आप कीसी "स्त्री शक्ती" की बुराई नही करेगी क्योकी ऐसा कर के आप आपकी ही अधोगती कर रही है। आप कम से कम आप की ही शत्रु तो मत बनो, ऐसा होने पर मैं भी कुछ नही कर सकुगाँ और यह महत्वपुर्ण अवसर आप के हाथ से चला जायेगा। क्योकी यह अनुष्ठान तो मैं सपुर्ण विश्व की स्त्री शक्ती के लिये कर रहा हु, सब मैंने मेरी ओर से स्पष्ट कर दिया है, अब आपकी आप जानो।

आप को कल्पना भी नही है की आपका कितनी सकारात्मक उर्जा शक्ती आपके ही विरोध मे खर्च करती है, इस लीये स्त्री शक्ती से कर बद्ध प्रार्थना है, की "स्त्रीशक्ती की ही निंदा से बचे।" आप मेरी बात केवल पाच दिन ही मानकर देखे आपको आपमे एक आमुल परीवर्तन अनुभव होगा, लकडी का वृक्ष काटने के लीये उपयोग होने वाली कुल्हाडी मे लकडी का डंडा इस्तमाल होता है, यह स्थिती न होने दे, आप किसी को भी नही सुधार सकती है, और दुसरो को सुधारने के चक्कर मे आप न बिगड जाये यह खतरा मुझे अधीक दिख रहा है।

आप सुधार सकती है। तो केवल अपने आप को बस वहीं सुधारने का प्रयास करे। बस यही आप के हाथ मे है, आप है की यह छोडकर सबको सुधारने का प्रयास कर रही है।
इसलीये आध्यात्मीक प्रगती करने के लीये अंन्तरमुखी बनीये अपने स्वयम के क्या दोष है। वह देखे उन्हे कैसे दुर कर सकती है। वह देखे, इसका दुसरा फायदा यह भी है। की आपका चित्त जब भितर की ओर जायेगा तो वह बाहर के नकारात्मक प्रभाव से भी बचा रहेगा, और चित्त भितर की ओर जाने से सशक्त भी होगा, इस समय स्त्रीशक्ती की एक बहुत बडी सामुहीकता अच्छी ध्यान की अवस्था मे है। आपको केवल इस सामुहीकता के साथ के जुडने का है बाकी सबतो सामुहीक शक्ती के सानीध्य मे घटीत हो जायेगा आपको अपने आप को इस सामुहीकता मे शामील करने का है। थोडा समय आप अपने आप को दिजीये यही समय आप के अंन्त तक काम आयेगा आप सबके लिये सोचती है। पर अपने आप के लीये नही सोचती है। इसी लिये मै आपका विशेष ध्यान रखता हु। मै कितना भी ध्यान रखु आपका ध्यान जबतक अपने आप पर नही होगा मेरा दिया गया "चैतन्य" भी व्यर्थ ही होगा, मेरा ध्यान आपके शरीर पर नही आत्मा के उपर है, और जब तक आपका ध्यान आपकी आत्मा पर नही होता कुछ नही हो सकता यानी बाहर से कुछ होगा नही जो होगा वह भितर से ही होगा और भितर जाने को आपको फुर्सत नही कम से कम यह पर्व दिन तो भितर की ओर रहो और अनुभव करो क्या घटीत होता है। यह "मकर संक्रान्ती" का पावन पर्व आप सबके जिवन मे भितर की यात्रा का पर्व सिद्ध हो इसी शुद्ध इच्छा के साथ

आपका
बाबा स्वामी
14.1.2009